कविता का समकालीन प्रमेय

अरुण होता

कविता का समकालीन प्रमेय

अरुण होता

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2026

© अरुण होता

माँ और पिताजी के

प्यार के लिए

जो किसी कालजयी कविता से

कम न था

अनुक्रम

भूमिका	7
अपने युग से संवाद करती अज्ञेय की कविता	12
जिंदगी बुरादा तो बारूद बनेगी ही : मुक्तिबोध की कविता	33
बैठकर खादी की गादी पर ढलती हैं प्यालियाँ	49
चिन्तन के धरातल पर कुँवरनारायण और सीताकांत की कविताएँ	67
सामाजिक हलचलों के बीच समकालीन हिन्दी कविता	79
समय के आर-पार के कवि	114
शहर के सबसे मासूम हिस्से को छूना चाहता हूँ	129
बहुमुखी जीवन की बहुआयामी कविताएँ	136
हमें अपने साथियों को बचाना है डूबते जहाज से	151
हिंदी कविता का समकालीन परिदृश्य और जितेन्द्र श्रीवास्तव का कवि-कर्म	173
समकालीन कविता में समय और समाज	224
सबसे खतरनाक है आदमी का चेहरा खत्म कर देना	252
सत्य वही है जिसका हम आविष्कार करें	261
मर-मर कर जीती है घास	267
समकालीन कविता के युवा स्वर	273
विश्व मानव चेतना और रवींद्रनाथ	285

हाशिये की नारी : उत्तर औपनिवेशिक बांग्ला कवयित्रियों के संदर्भ में 299

ओड़िया दलित कविता : खोत, परंपरा और प्रतिरोध चेतना 324

कविता समय तथा समाज की उपज होती है। अपने समय के अंतर्विरोधों, विसंगतियों तथा वैशिष्ट्य से कवि उद्वेलित, आंदोलित तथा प्रभावित रहता है। उसकी रचना पर उसका वर्तमान समय मौजूद तो रहता ही है, साथ ही अतीत और भविष्य भी उपस्थित होते हैं। अर्थात् कविता में अतीत, वर्तमान और भविष्य का सुंदर समन्वय होता है। कवि का 'विजन' सामने आता है । इस दृष्टि से देखा जाए तो कविता केवल कविता नहीं रह जाती है बल्कि उसमें तमाम शास्त्रों के बीज अंकुरित होते पाये जाते हैं। मसलन, मुक्तिबोध की कविताओं में न केवल उनका समय जीवित हुआ है, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अंतर्विरोधों का खुलासा भी हुआ है बल्कि आज तथा आने वाले कल की चिंताओं और परेशानियों पर कवि की चिंता उज्जीवित हुई है। यह इसलिए संभव हो पाया है कि कवि गहरे रूप से अपने समय और समाज से संपृक्त रहा था।

प्रस्तुत पुस्तक का नाम है 'कविता का समकालीन प्रमेय'। 'प्रमेय' का सामान्य आशय है— (1) जो प्रमाण का विषय हो सके (2) जो प्रमाणित किया जाने को हो (3) जो नापा जा सके। प्रमेय ज्यामिति का शब्द है। दरअसल, प्रत्येक कवि अपनी रचना के माध्यम से कोई न कोई प्रमेय स्थापित करता है। आलोचना में भी प्रमेय होता है। समय के न्यायालय में कवि का प्रमेय प्रमाणित होता है। रचना पर मुहर आलोचक नहीं, समय लगाता है। मीराँ की पदावली को वर्तमान यथार्थ से जोड़कर सामने रखा जाए तो वह खरी उतरती है। सूर की गोपियों को नारी अस्मिता के संदर्भ मे देखा जाए तो वह युगोपयोगी साबित होती है। कहने का आशय यह कि कोई भी रचना तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु रची नहीं जाती है। रचना

वह है जो अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के संदर्भों में भी अपनी अर्थवत्ता बनाए रखने की सामर्थ्य रखती है।

भूमिका

कविता का संबंध हृदय से है। भावों से है। रागात्मक संबंधों से है। इसलिए कविता का पठनपाठन साहित्य की अन्य विधाओं के पठन-पाठन से कुछ भिन्न होता है । कविता का बुनियादी काम संप्रेषण है। यह संप्रेषण सपाट नहीं होता है। ऊपर से सपाट दिखने पर भी उसमें गहराई छिपी रहती है। उसे जानने-समझने के लिए पाठक को कविता के परिदृश्य और परिप्रेक्ष्य पर भी ध्यान केंद्रित करना पड़ता है। कविता का पाठक अपने मानसिक स्तर, रुचि, सहृदयता आदि के आधार पर कविता को ग्रहण करता है। अच्छी कविता वही होती है जिसे पाठक पढ़ते हुए उससे जुड़ता चला जाता है। कवि के मनोभाव से अपने मनोभाव को जोड़ता है। एक बात और भी है, कविता के शब्द वही रहते हैं, जो रचना-काल में सृजित हुए थे। लेकिन उन शब्दों के अर्थ, कविता के संदर्भ, उसकी व्याख्या आदि युग के अनुकूल परिवर्तित होते हैं। ऐसी सामर्थ्य जिस कविता में होती है, उसकी अर्थवत्ता और प्रासंगिकता सदा लिए बनी रहती है। स्नेह, संवेदना, करुणा, सद्भाव, बंधुत्व आदि मूलभूत मानव मूल्यों को कविता मनुष्य मात्र को एकता के सूत्र में पिरोने का काम करती है।

कविता समय तथा समाज की उपज होती है। अपने समय के अंतर्विरोधों, विसंगतियों तथा वैशिष्ट्य से कवि उद्वेलित, आंदोलित तथा प्रभावित रहता है। उसकी रचना पर उसका वर्तमान समय मौजूद तो रहता ही है, साथ ही अतीत और भविष्य भी उपस्थित होते हैं। अर्थात् कविता में अतीत, वर्तमान और भविष्य का सुंदर समन्वय होता है। कवि का

'विज़न' सामने आता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो कविता केवल कविता नहीं रह जाती है बल्कि उसमें तमाम शास्त्रों के बीज अंकुरित होते पाये जाते हैं। मसलन, मुक्तिबोध की कविताओं में न केवल उनका समय जीवित हुआ है, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अंतर्विरोधों का खुलासा भी हुआ है बल्कि आज तथा आने वाले कल की चिंताओं और परेशानियों पर कवि की चिंता उज्जीवित हुई है। यह इसलिए संभव हो पाया है कि कवि गहरे रूप से अपने समय और समाज से संपृक्त रहा था।

प्रस्तुत पुस्तक का नाम है 'कविता का समकालीन प्रमेय'। 'प्रमेय' का सामान्य आशय है- (1) जो प्रमाण का विषय हो सके (2) जो प्रमाणित किया जाने को हो (3) जो नापा जा सके। प्रमेय ज्यामिति का शब्द है। दरअसल, प्रत्येक कवि अपनी रचना के माध्यम से कोई न कोई प्रमेय स्थापित करता है। आलोचना में भी प्रमेय होता है। समय के न्यायालय में कवि का प्रमेय प्रमाणित होता है। रचना पर मुहर आलोचक नहीं, समय लगाता है। आलोचना तो रचना के संदर्भों को उद्घाटित करती है। परिप्रेक्ष्यों को सामने लाती है। रचना को समकालीन परिदृश्य में जाँचा परखा जाना चाहिए। समय के फैसले क्रूर हो जाएँ तो रचना टिकाऊ नहीं हो सकती है। मीराँ की पदावली को वर्तमान यथार्थ से जोड़कर सामने रखा जाए तो वह खरी उतरती है। सूर की गोपियों को नारी अस्मिता के संदर्भ मे देखा जाए तो वह युगोपयोगी साबित होती है। कहने का आशय यह कि कोई भी रचना तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु रची नहीं जाती है। रचना वह है जो अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के संदर्भों में भी अपनी अर्थवत्ता बनाए रखने की सामर्थ्य रखती है।

इस किताब में अज्ञेय, मुक्तिबोध, भवानी भाई से लेकर युवा पीढ़ी के अंशुल त्रिपाठी, गौरव सोलंकी, प्रदीप जिलवाने तथा ज्योति चावला तक की कविताओं पर विचार किया गया है। कोशिश यह रही है कि 'ट्रेंड सेटर' कवियों की कविताओं के अनछुए पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाए। मसलन, अज्ञेय तथा भवानी भाई की कविताओं में निहित प्रगतिशील दृष्टि का विवेचन हुआ है। आलोचक पांडेय शशिभूषण 'शीतांशु', विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं ए. अरविंदाक्षन के कवि-लोक को उद्घाटित किया गया है। किताब का बड़ा भारी अंश समकालीन कविता पर केंद्रित है। हाँ, युवा रचनाकारों की कविताओं का विश्लेषण भी हुआ है। यह चयन पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं बल्कि कविता-संग्रहों की उपलब्धता के आधार पर किया गया है। तीन पीढ़ियों के रचना-संसार को किसी पुस्तक में भर पाने की हिम्मत मुझमें नहीं है। समकालीन कविता पर विचार करने के क्रम में, विषय तथा संदर्भानुसार कई महत्त्वपूर्ण कवियों का उल्लेख किया गया है। सच तो यह है कि इस पुस्तक में कविता, समकालीन कविता तथा युवा पीढ़ी की कविता को जानने-समझने की एक छोटी सी कोशिश की गई है।

सोवियत संघ के विघटन से अमेरिकी वर्चस्व को बढ़ावा मिला। पूँजीवादी शक्तियों की तानाशाही भी बढ़ी। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण आदि के प्रभावों से न केवल राजनीति और संस्कृति प्रभावित हुई है बल्कि हिंदी कविता भी गहरे रूप से उद्वेलित हुई है। बाजारवादी अर्थव्यवस्था और उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्प्रभावों से हमारा समय और समाज परिवर्तित हो रहे हैं। इस संदर्भ में हिंदी कविता की चिंता और उसके सरोकार को भी

विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। फासीवादी ताकतों के रक्तरंजित खेलों से लहूलुहान हो रही मानवता की चिंता को भी प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक के दूसरे खंड में विश्वकवि रवींद्रनाथ की विश्व मानव चेतना को संक्षेप में उज्जीवित किया गया है तथा आज के इस संहारकारी युग में उनकी चिंता की प्रासंगिकता पर भी विचार प्रस्तुत किया गया है। उत्तर औपनिवेशिक बांग्ला कवयित्रियों के संदर्भ में हाशिए की नारी की आवाज को पहचानने का एक छोटा-सा प्रयास हुआ है। अंतिम अध्याय में ओड़िया दलित कविता का विवेचन किया गया है। मुझे उम्मीद है कि हिंदी के पाठकों को यह दूसरा खंड काफी रोचक लगेगा।

कविता संबंधी अपने कुछ कार्यों को पुस्तकाकार रूप प्रदान करने में पत्नी चिन्मयी का विशेष हाथ रहा है, जिन्होंने तमाम घरेलू उलझनों से मुझे मुक्त रखा तथा घर-परिवार का संपूर्ण दायित्व अपने हाथों से निभाया। उनका मैं हृदय से आभारी हूँ। पुत्रद्वय - अर्चित और अंकितने भी मुझे कभी तंग नहीं किया और काम पूरा होने दिया, अतः दोनों को शुभाशीष।

हिन्दी के सुपरिचित कवि और ख्यात युवा आलोचक जितेंद्र श्रीवास्तव ने इस पुस्तक का नामकरण किया है तथा पुस्तक के प्रकाशन हेतु मुझे बार-बार प्रेरित किया है। इसलिए मित्रवर जितेन्द्र को धन्यवाद। नेशनल पब्लिशिंग हाउस (जयपुर) के सर्वेसर्वा श्री देवेन्द्र मलिक और निदेशक श्री आशीष मलिक ने सदा की तरह इसका सुरुचिपूर्ण प्रकाशन किया है। मैं इन दोनों के इस सौहार्द के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।